THE

BYTAL-PACHEESEE.

OR

THE TWENTY-FIVE TALES OF THE DEMON.

Baital Pachisi

A new Edition.

EDITED

BY

ESHWAR CHANDRA VIDYASAGAR.

Pricipal of the Sanskrit College.

PUBLISHED UNDER THE PATRONAGE OF THE

COLLEGE OF FORT WILLIAM.

CALCUTTA.

PRINTED AT THE SANSKRIT PRESS.

1852.

PREFACE.

The Bytál Pacheesee is a Collection of Legendary Stories relating to that celebrated character in Hindu Annals Rájá Vikramáditya. The work contains no traces of art or genius in its composition; but on the contrary exhibits those clumsy attempts at the wonderful, sometimes bordering on childishness, which are so general in the Legends of a dark age. It is, however, very popular among the great mass of the people of this country and expresses accurately their ideas and feelings on many subjects. This fact, and the circumstance of the Hindee version being highly idiomatic and correct in its style, render this work an excellent Text book for students of the Hindee language.

The Original of these tales is to be found in the Kathá Sarit Ságara, an ancient and voluminous Collection of Tales and Legends in Sanskrit verse, by Somadeva Bhatta, under the title of Betálapanchavinshatiká. There exists also, under the same title, a Sanskrit prose version.

In the reign of Muhammad Sháha, Súrat Kabíshwar, by order of Rájá Jye Singh, translated the work from Sanskrit into Braj Bhákhá. This version was translated, by direction of Dr. Gilchrist, in the time of Marquis Wellesley, into Hindoostanee by Muzhar Ali Khan, whose poetical name was Vilá, aided by Lallu Lál Kab, the elegant writer of Premságar; both Moonshees of the College of Fort William. This translation, of which the present is a new edition, was printed in 1805, having been revised, according to the instructions of Captain James Mouat, by Tárineecharan Mitra, the learned Head Moonshee of the above Institution.

A Bengali version of this translation was made, by the Editor of the present edition, in the year 1847, by directions of Major G. T. Marshall, Secretary to the College of Fort William, and was adopted, under the title of Betálpanchabinshati, as a Text book for the Students of that College. A poetical version in Bengali also exists and seems to have been taken from the Original Sanskrit.

In bringing out the edition now presented to the public, the Original Text of 1805 and the Agra Edition of 1843, have been carefully collated. The former has been generally adhered to; but the latter, though sometimes inferior in accuracy, has been occasionally followed in instances where it appeared judiciously modernised in its style of expression and orthography. The correct Sanskrit forms of the proper names, as far as they can be traced, have been inserted in the places where they occur, at the foot of the page. Some do not admit of Sanskrit equivalents; and it is evident that the Translators were not particular in this point, and adopted popular epithets at their own pleasure.

Calcutta.
15th. January, 1852.

फ़िहरिस्त बैतालपचीसी की.

कैफ़ीयत.	सफ़हः.
शुरूअ कहानी का.	१
पहली कहानी.	१२
दूसरी कहानी.	२५
तीसरी कहानी.	२६
चौथी कहानी.	३६
पांचवीं कहानी.	५०
छठी कहानी.	५४
सातवीं कहानी.	५६
आठवीं कहानी.	६१
नवीं कहानी.	६५
दसवीं कहानी.	६६
ग्यारहवीं कहानी.	७२
बारहवीं कहानी.	७७
तेरहवीं कहानी.	८०
चौदहवीं कहानी.	८५
पंदरहवीं कहानी.	६४
सोलहवीं कहानी.	१०२

	सफ़ह़.
सतरहवीं कहानी.	१०८
अठारवीं कहानी.	११२
ऊन्नीसवीं कहानी.	११८
बीसवीं कहानी.	१२३
इक्कीसवीं कहानी.	१२७
बाईसवीं कहानी.	१२९
तेईसवीं कहानी.	१३१
चौबीसवीं कहानी.	१३६
पचीसवीं कहानी.	१३८

जो पहले हो तौहीद से तरज़बां
लिखूं आगे नअ़ति रसूलि ज़मां.

इबतिदाय दास्तान यों है, कि मुह़म्मदशाह बादशाह के ज़माने में, राजा जैसिंह सवाई ने, जो मालिक जै नगर का था, सूरत नाम कबीश्वर से कहा कि बैतालपचीसी को, जो ज़बानि संस्कृत में है, तुम ब्रज भाषा में कहो. तब उस ने, बमूजिब ऊ़कम राजा के, ब्रज की बोली में कही. सो अब, शाहिआ़लम बादशाह के अ़हद के बीच, और अस़र में अमीरुल उमरा ज़ुबदए नोईनानि अ़ज़ीमुश्शान, मुशीरि ख़ासि शाहि कैवां बारगाहि इंगलिस्तान, अशरफ़ुल अशराफ़ मारकुइस वलिज़ली गवरनर जनरल बहादुर (दाम मुलकऊ) के, मज़हरअ़ली ख़ानि शाइ़र ने, जिस का तख़ल्लुस़ विला है, वास्ते सीखने और समझने साह़िबानि आ़लीशान के, बमूजिब फ़रमाने जनाब जान गिलक्रिस्त साह़िब (दाम इक़बालऊ) के, ज़बानि सहल में, जो ख़ास़ ओ आम बोलते हैं और जिसे आ़लिम ओ जाहिल गुनी कूढ़ सब समझें, और हरऐक की तबीअ़त पर आसान हो, मुशकिल किसी त़रह़ की ज़िहन पर न गुज़रे, और ब्रज की बोली अकस़र उस में रहे, श्रीलल्लू जी लाल कबि की मदद से, बयान किया था.

फ़िलहाल, मुवाफ़िक़ इरशादि मुदर्रिसि हिन्दी ख़ुदावंदि निअ्मत जनाब कपतान जिमिस मेाअट साहिब (दाम इक़्बालहू) के, तारिणीचरण मित्र ने, छापे के वास्ते, संस्कृत और भाषा के अलफ़ाज़ को, जो रेख़ते के मुहावरे में कम आते हैं, निकालकर मुरव्वज अलफ़ाज़ को दाख़िल किया. मगर बअ्ज़े लफ़्ज़ हिंदुओं का, जिस के निकालने से ख़लल जाना, बहाल रखा. उम्मेद है कि क़बूल पावे.

बैतालपच्चीसी

मुख्य कहानीका.

धारा नगर नाम एक शहर. वहां का राजा गन्धर्व सेन. उस की चार रानियां थीं. उन से छः बेटे थे. एक से एक पण्डित और ज़ोरावर था. क़ज़ाकार बअ्द चन्द रोज़ के वह राजा मरगया; और उस की जगह बड़ा बेटा शङ्क(१) नाम राजा हुआ. फिर कितने दिनों के पीछे, उसका छोटा भाई विक्रम,(२) बड़े भाई को मारकर, आप राजा हुआ; और बख़ूबी राज करने लगा. दिन बदिन उसका राज ऐसा बढ़ा, कि तमाम जम्बुद्वीपका राजा हुआ, और अचल राज करके साका बांधा.

कितने दिनोंके बअ्द, राजा ने यह अपने दिल में बिचारा कि जिन मुल्कों का नाम मैं सुनता हूं उन की सैर किया चाहिये. यह अपने दिल में ठान, राजगद्दी अपने छोटे भाई भरथरी(३) को सौंप, आप जोगी बन, मुल्क मुल्क की और बन बन की सैर करने लगा.

एक ब्राह्मण उस शहर में तपस्या करता था. एक दिन देवता ने उसे अमृत फल ला दिया. तब उस ने, उस फल को अपने घर में लाकर, ब्राह्मणी से कहा कि जो कोई

(१) शङ्कु. (२) विक्रमादित्य. (३) भर्तृहरि.